इकाई-1

1. खिलौनेवाला

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. बच्चे क्या कर रहे हैं?
3. इस चित्र को देखकर आप क्या सोच रहे हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह कविता पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

SCERT TELANGANA

वह देखो माँ आज
खिलौनेवाला फिर से आया है।
कई तरह के सुंदर-सुंदर
नए खिलौने लाया है।

हरा-हरा तोता पिंजड़े में
गेंद एक पैसे वाली
छोटी-सी मोटर गाड़ी है
सर-सर-सर चलने वाली।

सीटी भी है कई तरह की
कई तरह के सुंदर खेल
चाभी भर देने से भक-भक
करती चलने वाली रेल।

गुड़िया भी है बहुत भली-सी
पहिने कानों में बाली
छोटा-सा 'टी सेट' है
छोटे-छोटे हैं लोटा-थाली।

छोटे-छोटे धनुष-बाण हैं
हैं छोटी-छोटी तलवार
नए खिलौने ले लो भैया
ज़ोर ज़ोर वह रहा पुकार।

मुन्नू ने गुड़िया ले ली है
मोहन ने मोटर गाड़ी
मचल-मचल सरला कहती है
माँ से लेने को साड़ी।

कभी खिलौनेवाला भी माँ
क्या साड़ी ले आता है।
साड़ी तो वह कपड़े वाला
कभी-कभी दे जाता है।

अम्मा तुमने तो लाकर के
मुझे दे दिए पैसे चार
कौन खिलौना लेता हूँ मैं
तुम भी मन में करो विचार।

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. यह कविता आपको कैसी लगी? और क्यों ? बताइए।
2. यह कविता किससे संबंधित है? आपके पास कौन-कौन से खिलौने हैं? उन खिलौनों से आप कैसे खेलते हैं?
3. कविता में लड़के की जगह तुम होते तो कौनसा खिलौना लेते और क्यों?

पढ़िए

I. **'सर-सर', 'सुंदर-सुंदर'** ऐसे शब्दों का प्रयोग कविता में हुआ है। आप कविता में ऐसे शब्दों को रेखांकित कीजिए और लिखिए।

II. **कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए।**

कभी खिलौनेवाला भी माँ

.....

साड़ी तो वह कपड़े वाला

.....

III. **नीचे दिये गये भाव कविता की जिन पंक्तियों में आए हैं उन्हें पहचानिए और लिखिए ।**

1. खिलौनेवाला साड़ी नहीं बेचता है ।

.....

2. खिलौनेवाला बच्चों को खिलौने लेने के लिए आवाज़ें लगा रहा है ।

.....

3. मुझे कौन-सा खिलौना चाहिए-उसमें माँ की सलाह चाहिए ।

.....

IV. **कविता पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**

1. बालक तोता, बिल्ली, मोटर जैसे खिलौने क्यों नहीं खरीदना चाहता था ?
2. खिलौनेवाले के पास कौन-कौन से खिलौने हैं ?
3. खिलौनेवाला साड़ी क्यों नहीं लाता है?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. कविता में आये खिलौनों के अलावा अन्य खिलौनों के नाम लिखिए।
2. फेरीवाले जो सामान बेचते हैं, वे दुकानों में भी मिलते हैं। आप सामान कहाँ से खरीदना पसंद करते हैं और क्यों?
3. खिलौने वाले की तरह मिठाई वाला आता तो उसके पास कौन-कौनसी मिठाइयाँ होतीं?
4. कविता में आगे क्या हुआ होगा? सोचकर बताइए।

शब्द भंडार

1. आपके पास कई खिलौने होंगे। जैसे मोटर, कार, जहाज़ आदि। आप कुछ और खिलौनों के नाम लिखिए। साथ में यह भी बताइए कि वे खिलौने किन चीज़ों से बने हैं।

उदाहरणः गेंद - रबर

2. खिलौने की दुकान से आपने 'टी-सेट' ख़रीदा है। आप चाय बनाना चाहते हैं। चाय बनाने के लिए आपको किन-किन चीज़ों की ज़रूरत होगी।

.....

.....

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

खिलौनेवाले के पास से मनु खिलौना ख़रीदना चाहती है। साथ में उसकी माँ भी है। खिलौनेवाले, माँ और मनु के बीच होने वाले वार्तालाप को आगे बढ़ाइए :

खिलौनेवाला - खिलौने ले लो, खिलौने, रंग-बिरंगे खिलौने, सस्ते और मस्त खिलौने।
मनु - माँ, माँ, मुझे खिलौना चाहिए।
माँ - .....
मनु - .....
खिलौनेवाला - .....

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

धूप, जाड़ा, वर्षा-हर मौसम में कठिनाइयों का सामना करते हुए फेरीवाले गली-गली घूमकर आप की ज़रूरत की चीज़ें आप तक पहुँचाते हैं। इन फेरीवालों की प्रशंसा में पाँच वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

'खिलौनेवाला' शब्द संज्ञा में **'वाला'** जोड़ने से बना है । दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द कुछ संज्ञा से बने हैं, कुछ क्रिया से, उन्हें छाँटकर लिखिए ।

1 टोपीवाला कहाँ जा रहा है?
2 पानवाले की दुकान आज बंद है।
3 मेरी दिल्लीवाली मौसी बस कंडक्टर है।
4 मैंने नाचने वाला बंदर देखा।
5 नंदू को बोलने वाली गुड़िया चाहिए।

परियोजना कार्य

अपने पाँच मित्रों के नाम लिखिए, उनसे पता कीजिए कि उन्हें कौन से खिलौने पसंद हैं। उन खिलौनों के नाम इस तालिका में लिखिए।

मित्र का नाम	पसंद के खिलौने

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता लय के साथ सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं की भाव सहित व्याख्या कर सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. कविता के शब्दों से तुकबंद वाक्य लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

ईदगाह

उपवाचक

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद आयी है। कितना मनोहर और सुहावना प्रभात है। वृक्षों में कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो। कितना प्यारा, कितना शीतल मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा हो। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह की तैयारियाँ हो रही हैं। लड़के सबसे अधिक प्रसन्न हैं। जल्दी मची है कि लोग ईदगाह के लिए चलते नहीं।

हामिद बड़ा प्रसन्न है। चार-पाँच साल का गरीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गयी। हामिद अब अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में ही सोता है।

अमीना का दिल कचपचा रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का अब अमीना के सिवा कौन है? उसे कैसे अकेले मेले में जाने दें। उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाये तो क्या हो? नन्हीं सी जान। तीन कोस पैदल कैसे चलेगा? पैरों में छाले पड़ जायेंगे। पर हामिद के उत्साह का क्या करे? अधिक पैसे भी पास नहीं हैं। हामिद भीतर जाकर कहता है -तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा, बिल्कुल मत डरना''।

गाँव से मेला चला। अन्य बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते। कभी किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों की प्रतीक्षा करते।

सहसा ईदगाह पर दृष्टि पड़ी। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फ़र्श है जिस पर बिछायत हो रही है। नमाज़ियों की पंक्तियाँ एक कतार के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गयी हैं। धन और पद का यहाँ कोई प्रश्न है नहीं। लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुकते हैं। फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल

SCERT TELANGANA

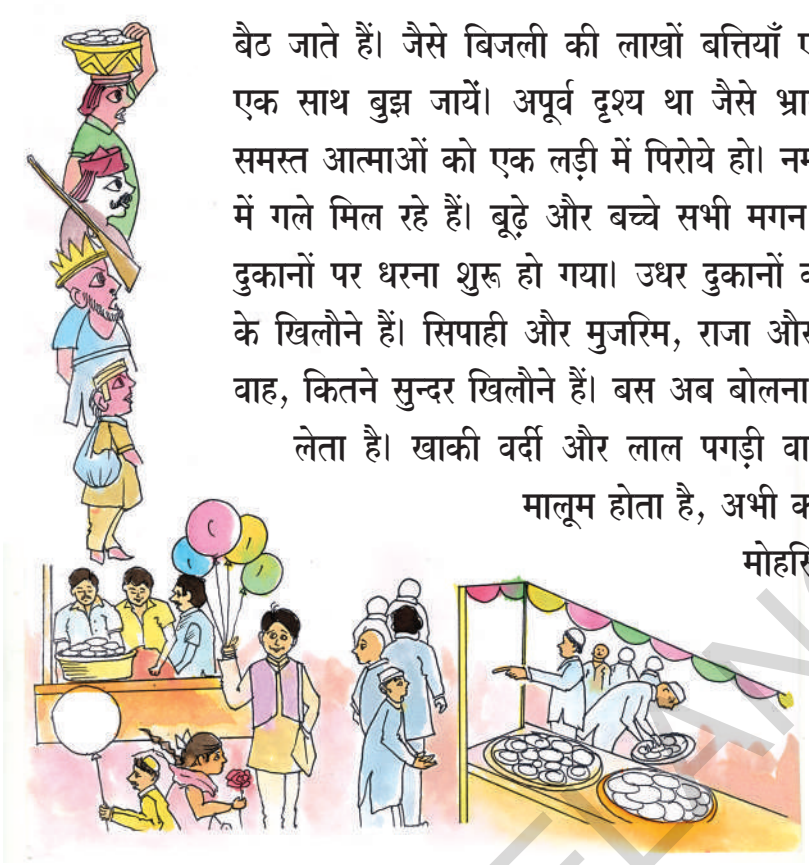

बैठ जाते हैं। जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ जल उठें और फिर एक साथ बुझ जायें। अपूर्व दृश्य था जैसे भ्रातृत्व भाव का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोये हो। नमाज़ समाप्त हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। बूढ़े और बच्चे सभी मगन है। मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धरना शुरू हो गया। उधर दुकानों की कतारें लगी हैं। तरह-तरह के खिलौने हैं। सिपाही और मुजरिम, राजा और वकील, भिश्ती और धोबी। वाह, कितने सुन्दर खिलौने हैं। बस अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है। खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला कंधे पर बन्दूक रखे हुए मालूम होता है, अभी कवायद किये चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया - कमर झुकी है, ऊपर मशक रखी है। नूरे को वकील से प्रेम है - काला चोंगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानूनी पोथा लिए हुए मालूम होता है, अभी-अभी अदालत से बहस किये चले आ रहे हैं। सब दो-दो पैसों के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं। वह इतने महंगे खिलौने कैसे ले?

खिलौने के बाद मिठाई का नंबर आता है। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब-जामुन। मजे से खा रहे हैं।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की थी। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। अकेला हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए हैं। उसे ख्याल आया - दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होगी। फिर उसकी अंगुलियाँ कभी न जलेंगी। खिलौनों से क्या फायदा? जरा देर तो खुशी होती है। फिर तो कोई उनकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता। कई तो घर पहुँचते-पहुँचते ही टूट-फूट कर बराबर हो जायेंगे।

हामिद के साथी आगे बढ़ गये हैं। सबील पर सबके सब शरबत पी रहे हैं। हामिद सोचता है। देखो, कैसे हैं, ये सब। इतनी मिठाइयाँ ली। मुझे किसी ने एक भी नहीं दी। उस पर कहते

SCERT TELANGANA

हैं, मेरे साथ खेलो। खायें मिठाइयाँ, उन्हीं का मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुन्सियाँ निकलेगी, जबान चटोरी हो जायेगी। मैं क्यों जीभ खराब करूँ? मैं तो चिमटा ही लूँगा। दादी उसे देखेंगी। दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी। कहेंगी - ''मेरा बच्चा अम्मा के लिए चिमटा लाया है।'' हज़ारों दुआएँ देंगी। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआ देगा? मेरे पास पैसे नहीं हैं, तभी तो मोहसिन और महमूद मिजाज दिखाते हैं। सबके सब खूब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है? हँसो मेरी बला से।

उसने दुकानदार से पूछा- ''यह चिमटा कितने का है?'' दुकानदार ने छह पैसे बताये। हामिद का दिल बैठ गया।

''ठीक-ठीक बताओ।''

''ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे। लेना है तो लो, नहीं तो चलते बनो।''

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा - ''तीन पैसे लोगे?''

और यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि कहीं दुकानदार घुड़क न दे। लेकिन दुकानदार ने घुड़की नहीं दी। बुलाकर तीन पैसे में चिमटा दे दिया। हामिद ने इस तरह उसे कंधे पर रखा मानो वह बंदूक हो, और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। मोहसिन ने हँसकर कहा- ''यह चिमटा क्यों लाया, पगले?'' हामिद ने सफाई दी- ''तुम्हारे खिलौने क्या हैं? कोरी मिट्टी जरा नीचे गिर पड़े तो टूट-फूटकर खत्म हो जायें, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भाग जाये, वकील साहब चोंगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जायें। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमें हिंद लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जायेगा, और उसकी आँखें निकाल लेगा। ''

हामिद के तर्क का और बच्चों के पास जवाब नहीं था। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किये पर कोई काम की चीज़ नहीं ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा दिया। हामिद की बात का ऐसा रौब पड़ा कि जो साथी अभी तक उसे कुछ समझ ही नहीं रहे थे, वे बारी-बारी से उसे अपने खिलौने दिखाने लगे। हामिद ने भी खुले दिल से उन खिलौनों की तारीफ की। उसका चिमटा भी बारी-बारी से सबके हाथों से गुज़रा और सबने उसको खूब सराहा।

SCERT TELANGANA

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गयी। मेलेवाले घर पहुँचे। मोहसिन की छोटी बहिन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली तो मियाँ भिश्ती नीचे आ पड़े और सुरलोक सिधारे।

मियाँ नूरे ने दीवार पर दो खूँटियाँ गाड़ी। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा। पटरे पर कागज का कालीन रखा गया और नूरे के वकील साहब उस पर राजा भोज की तरह विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब लुढ़क पड़े और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया।

रहा महमूद का सिपाही, उसके लिए एक टोकरी आयी। उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाये गये जिसमें सिपाही आराम से लेटे। महमूद ने टोकरी उठायी और द्वार पर चक्कर लगाने लगा। उसके दोनों भाई सिपाही की तरफ से ''जागते रहो '' पुकारते हुए चले। इतने में महमूद को ठोकर लगी। टोकरी नीचे गिरी और उसके साथ मियाँ सिपाही अपनी बंदूक लिये जमीन पर आ गिरे। बेचारे की एक टाँग टूट गयी।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में लेकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

'' यह चिमटा कहाँ से आया?''

''मैंने मोल लिया है।''

''कितने पैसे में?''

''तीन पैसे में।''

अमीना को क्रोध आया। ''दो पहर हो गये। न कुछ खाया न पिया। तीन पैसे थे। उनका भी यह चिमटा उठा लाया।''

हामिद ने अपराधी भाव से कहा ''तुम्हारी अंगुलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसीलिए मैंने इसे ले लिया। ''

अमीना का क्रोध काफ़ूर हो गया। बच्चे में कितना त्याग है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। पर इसे वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी का इतना ध्यान रहा। यह सब सोचते हुए बुढ़िया गद्‌गद् हो गयी और रो उठी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और उसकी आँखों से आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती जाती थीं। और उधर हामिद अपनी दादी की प्यार भरी गोदी में दुबका जा रहा था।

SCERT TELANGANA